आम व लीची की करें उचित देखभाल

मंजर को निगल गया मधुआ रोग

आम

वरीय संवाददाता, मुजफ्फरपुर

आम के पेड़ में इस वर्ष मंजर अच्छे लगे थे, लेकिन मधुआ रोग मंजर को चट कर गया है. आम के मंजर पर दवा का छिड़काव हुआ, लेकिन मधुआ पर कोई खास असर नहीं पड़ा. अब स्थानीय स्तर पर आम के उत्पादन में काफी गिरावट आने की संभावना है. सही देखभाल करने वाले किसानों के बाग में कुछ आम के फल बचे हैं.

पछिया हवा से मंजर सूखा

पेड़ों की जड़ों में पानी पहले से ही कम था. पछिया हवा से मंजर सूख गया. इससे भी खतरनाक मधुआ रोग हो गया. मधुआ रोग पुरवा हवा के साथ आया था. किसानों ने पेड़ पर दवा का छिड़काव किया. कोई फायदा नहीं हुआ. अब आम के कुछ पेड़ों में 30 से 40 प्रतिशत ही फल बचे हैं. यानी 60 प्रतिशत फल पछिया हवा व मधुआ रोग के कारण बरबाद हो गये. पूरे उत्तर बिहार में आम का यही हाल है.

डाली में बचे कम फल

सकरा के किसान दिनेश कुमार बताते हैं कि पुरवा हवा मधुआ रोग लेकर आयी. पछिया ने मंजर को सूखा डाला. आम की डाली में काफी कम फल बचे हैं. बंदरा के किसान सतीश कुमार द्विवेदी बताते हैं, आम की स्थिति बेहद खराब है. जिन पेड़ों में पिछले वर्ष फल लगे थे, उनमें मंजर नहीं आये. फिर भी करीब 50 फीसदी पेड़ों में मंजर आये थे. इसे पुरवा व तेज पछिया हवा ने बरबाद कर दिया.

किसानों के लिए सलाह

राजेंद्र कृषि विवि पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा के नोडल पदाधिकारी डॉ आइबी पांडेय ने बताया कि पछिया हवा चल रही है. ऐसे में आम व लीची में दाना आने 15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करना जरूरी है. मधुआ रोग व अन्य कीड़ों से बचाव के लिए एक लीटर पानी में दो ग्राम सल्फेक्स या कैराथेन का छिड़काव करना जरूरी है. एक लीटर पानी में इमीडाक्लोरोपिड 1.5 ग्राम व इसके साथ एक मिली लीटर प्लानोफिक्स हार्मोन प्रति पांच लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें.

फल भेदक कीटों से करें लीची का बचाव

लीची

वरीय संवाददाता, मुजफ्फरपुर

लीची में इस वर्ष बेहतर उत्पादन की उम्मीद बंधी है. अच्छी उत्पादन के लिए लीची बागों का उचित देखभाल जरूरी है. किसानों से राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र को लीची में फल बेधक कीट के प्रकोप की सूचना मिल रही है. फल बेधक कीट से लीची के छोटे फल गिर रहे हैं. इन कीट से लीची को बचाने की आवश्यकता है. राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिक एसडी पांडेय ने फल बेधक कीट से लीची को बचाने के लिए सलाह दी है. लीची बाग में फेरोमेन ट्रैप यथाशीघ्र लगाये. इस समय शाही किस्म में नीम तेल व नीम आधारित कोई भी कीटनाशी का चार मिली लीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना जरूरी है.

लीची की समस्याओं के समाधान के लिए इन नंबरों पर वैज्ञानिक से बात कर सकते हैं.

9431813884,9835171891, 9835274642, 993273391

इस प्रयोग से फल बेधक कीट का प्रकोप कम हो सकता है. जिन किसानों के पास चाइना के पेड़ हैं वे इसी दवा का प्रयोग 10 से 15 दिन बाद कर सकते हैं. अगर यह दवा नहीं मिले तो विकल्प के तौर पर फिप्रोनील आठ ईसी दो मिली लीटर प्रति लीटर या क्लोरपायरीफास 20 ईसी दो मिली लीटर प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव किया जा सकता है. बगीचे में लगातार नमी बनाये रखने की जरूरत है. इससे फलों के विकास में मदद मिलेगी. इसी सप्ताह प्लानोफिक्स दस लीटर पानी में चार मिली लीटर का पहला छिड़काव किया जा सकता है.